समीक्षा बैठक! माइक्रोफाइनेंस कंपनियों की कोई भी शिकायत एडीएम अथवा एसडीएम को करे- कलेक्टर

जनवकालत

रतलाम। जिले में माइक्रोफाइनेंस कंपनियों के संबंध में कोई भी पीड़ित व्यक्ति अपनी शिकायत प्रशासन को दर्ज करा सकता है। समयावधि पत्रों की समीक्षा बैठक में कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने निर्देश दिए कि कंपनियों के कर्ज जाल में फंसा कोई भी व्यक्ति अपर कलेक्टर श्रीमती जमुना भिड़े अथवा अपने क्षेत्र के एसडीएम को शिकायत दर्ज करा सकता है। अपर कलेक्टर को इस संबंध में नोडल अधिकारी बनाया गया है कलेक्टर ने बैठक में अन्य विभागों की योजनाओं कार्यक्रमों की भी समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश अधिकारियों को दिए। बैठक में सीईओ जिला पंचायत श्री संदीप केरकेट्टा तथा जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने माइक्रोफाइनेंस कंपनियों के संबंध में जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक श्री राकेश गर्ग को भी आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए। कलेक्टर ने सभी एसडीएम को निर्देश दिए कि कंपनियों से पीड़ित कोई भी व्यक्ति आपके पास आता है तो उसकी शिकायत बकायदा रजिस्टर की जाए। शिकायत पर तत्काल एक्शन ली जाए।

कलेक्टर ने जय किसान फसल ऋण माफी योजना की समीक्षा करते हुए उप संचालक कृषि श्री जी.एस. मोहनिया को जिले की शेष बची तहसीलों में भी ऋण माफी कार्यक्रम आयोजन की तैयारियों के निर्देश दिए। कलेक्टर ने उपायुक्त सहकारिता को यहां सुनिश्चित करने को कहा कि दूसरे चरण में सैलाना, बाजना रावटी तथा ताल के लाभान्वित किए गए कर्ज माफ हुए वाले पात्र शत-प्रतिशत किसानों को ऋण मुक्ति प्रमाण पत्र मिल जाए। इस आशय का प्रमाण पत्र भी उपायुक्त सहकारिता प्रस्तुत करें।

राज्य शासन द्वारा लागू की गई मुख्यमंत्री मदद योजना के तहत पात्र आदिवासी परिवारों को लाभान्वित किए जाने हेतु कलेक्टर ने निर्देश दिए कि संबंधित ग्राम पंचायतों के सचिव द्वारा समय सीमा में आदिवासी परिवारों में जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र जारी कर दिए जाएं ताकि संबंधित परिवार को शासन द्वारा निशुल्क प्रदाय किए जाने वाले खाद्यान्न की पूर्ति की जा सके। योजना में आदिवासी परिवार में जन्म के अवसर पर 50 किलोग्राम तथा मृत्यु के अवसर पर 100 किलोग्राम खाद्यान्न निशुल्क प्रदान किया जाता है। मदद योजना में आदिवासी पंचायतों में दिए जाने वाले बर्तनों की टेंडर कार्रवाई जारी है। जिले में बीपीएल परिवारों के सत्यापन के लिए जारी अभियान के तहत सैलाना तथा बाजना विकास खंडों में बचे हुए कार्य को शीघ्रता से पूर्ण करने के निर्देश कलेक्टर ने दिए। इस संबंध में कलेक्टर ने बाजना तथा सैलाना के जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों से कहा कि यदि समय सीमा में कार्य नहीं हुआ तो उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी यह उनको अंतिम चेतावनी है।

राज्य शासन की स्व रोजगार मूलक मुख्यमंत्री योजनाओं की समीक्षा में कलेक्टर ने निर्देश दिए कि बैंक शाखाओं के प्रबंधकों द्वारा प्रकरणों में स्वीकृति के साथ ही वितरण की कार्रवाई भी समय सीमा में की जाना चाहिए यदि किसी बैंक शाखा प्रबंधक द्वारा हितग्राही के साथ दुर्व्यवहार का प्रकरण सामने आता है तो उसके विरुद्ध सख्त कार्रवाई सुनिश्चित रूप से की जाएगी।

खुशियों की दास्तां

ऋण माफी योजना में 1 लाख 93 हजार की कर्ज माफी से खुश है किसान कनीराम

जनवकालत/रतलाम। सैलाना विकासखंड के ग्राम सांसर में खेती करने वाले आदिवासी किसान कनीराम पिता कोदर मुख्यमंत्री जय किसान फसल ऋण माफी योजना में मिले 1 लाख 93 हजार 958 रूपये की कर्ज माफी से उत्साहित होकर कहते है कि मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ ने किसानो से किया अपना वादा पूर्ण कर दिखा दिया है कि वे किसानों की समस्याओं के निवारण के लिये अत्यंत सजग है। श्री कनीराम कहते है कि शासन की ऋण माफी योजना उन जैसे छोटे किसानो के लिए कितनी कारगार है यह कोई पूछे, उन जैसे छोटे किसानों से जिन्होने इन ऋण माफी योजना की राशि के सहारे ही अपने खेतों में इस बार की फसल लगा रखी है अन्यथा ऋण चुकाना तो दूर की बात थी, खेतो में फसल लगाना ही मुश्किल था।

सैलाना में आयोजित जय किसान फसल ऋण माफी योजना कार्यक्रम में श्री कनीराम को जैसे ही जिले के प्रभारी मंत्री श्री सचिन यादव तथा विधायक श्री हर्षविजय गेहलोत के हाथो जैसे ही ऋण माफी योजना का प्रमाण पत्र मिला उनकी आंखे खुशी से छलछला आई। उन्होने खुशी-खुशी बताया कि जय किसान फसल ऋण माफी योजना के सहारे ही वे अपने खेत में विभिन्न फसले लगा पाए है अन्यथा समिति से लिए गये ऋण के कारण वे डिफाल्टर की श्रेणी में आ जाते और उन्हें पुनः कही से ऋण नही मिलता, तो उनका क्या होता, यह वे कहकर नही बता सकते।

नई सुविधा! मार्कशीट में सुधार के लिए ऑनलाइन आवेदन होंगे मंजूर

रतलाम। माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल की बोर्ड परीक्षा की मार्कशीट में संशोधन या सुधार कराने के लिए विद्यार्थियों या उनके अभिभावकों को अब राजधानी भोपाल के चक्कर नहीं लगाना होंगे। बोर्ड परीक्षा की मार्कशीट में नाम, जन्म तारीख, मीडियम या अन्य कोई सुधार के लिए छात्र-छात्राएं ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। यहां ही समन्वय संस्था में दस्तावेज जमा करना होंगे। दरअसल, अभी तक सबसे ज्यादा परेशानी यह थी कि छात्र-छात्राएं आवेदन तो ऑनलाइन तो ऑनलाइन कर देते थे, लेकिन उन्हें दस्तावेज लेकर भोपाल बोर्ड ऑफिस जाना पड़ता था।

नया आदेश

इन सभी परेशानियों से विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को बचाने के लिए बोर्ड ने नया आदेश जारी किया है। इसमें कहा गया है कि जिले की समन्वय संस्था द्वारा परीक्षा के दौरान ऑनलाइन आवेदन की हार्डकॉपी जमा करवाने से लेकर रोल नंबर, परीक्षा के पेपर, कॉपियों का वितरण किया जाता है। इसके साथ ही अब मार्कशीट संबंधी कार्य भी करेंगे। अब मार्कशीट में संशोधन का कार्य भी जिले की समन्वय संस्था के प्राचार्य देखेंगे। इसके लिए छात्र को ऑनलाइन आवेदन कर दस्तावेज जमा कराना होंगे। यहां से प्राचार्य दस्वावेज देख स्वीकृति देंगे। इससे मार्कशीट में सुधार हो जाएगा।

निरीक्षण! ईटों की क्वालिटी पर आयुक्त ने जाहिर की नाराजगी

जनवकालत/रतलाम। भोपाल से आए मध्य प्रदेश शासन के निशक्तजन कल्याण विभाग आयुक्त श्री संदीप रजक ने सोमवार को रतलाम में विभिन्न संस्थानों का निरीक्षण किया। इस दौरान बिरियाखेड़ी क्षेत्र में निर्माणाधीन जिला विकलांग पुनर्वास केंद्र का निरीक्षण करते हुए उपयोग में ली जा रही ईटों की गुणवत्ता पर अप्रसन्नता व्यक्त की। संबंधित इंजीनियर को तत्काल ईटों को बदलने के निर्देश दिए। आयुक्त ने डे-केयर सेंटर तथा वृद्ध आश्रम भी देखा। निवासरत बुजुर्गों से मुलाकात की, चर्चा करते हुए खुश रहने के लिए बुजुर्गों को टिप्स भी दिए।

आयुक्त श्री रजक ने सीडब्ल्यूएसएन छात्रावास का भी निरीक्षण किया। छात्रावास के किचन कक्ष तथा अन्य व्यवस्थाओं पर संतुष्टि व्यक्त की। दिव्यांग विद्यार्थियों की परीक्षाओं की तैयारियों को देखते हुए निर्देश दिए कि विशेष शिक्षकों द्वारा अतिरिक्त समय दिया जा कर बच्चों की पढ़ाई करवाई जाए। छात्रावास के पास निर्माणाधीन उद्यान का एक गेट छात्रावास की ओर किए जाने के निर्देश भी दिए ताकि दिव्यांग बच्चे उद्यान का लाभ ले सकें उन्होंने कहा कि उद्यान को दिव्यांग अनुभूति पार्क के रूप में विकसित किया जाएगा।

आयुक्त ने निर्माणाधीन जिला विकलांग पुनर्वास केंद्र में बनाई जा रही रैंप तथा रेलिंग पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए ताकि दिव्यांगजन की ट्राईसाईकिल या व्हील चेयर सरलता पूर्वक आ जा सके संपूर्ण प्रांगण को बाधा रहित बनाने हेतु भी निर्देशित किया। वृद्धाआश्रम के निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने वृद्धाआश्रम के सब कमरों में वेंटिलेशन नहीं होने पर खिड़कियां खोल कर रखने और कक्षों की प्रतिदिन सफाई हेतु निर्देशित किया। डे-केयर सेंटर निरीक्षण के दौरान गतिविधियों की प्रशंसा की सेंटर का ज्यादा से ज्यादा प्रचार करने पर जोर दिया इसके अलावा वृद्धाआश्रम में बनाए गए रैंप की लंबाई बढ़ाने तथा उसे बाधा रहित बनाने के लिए निर्देश दिए।

* स्मृति प्रसंग *

किसान पुत्र राजनेता, मंत्री स्वर्गीय घनश्याम पाटीदार

ललित भाटी इंदौर
जनवकालत/रतलाम

कैसे, कोई एक अति सामान्य परिवार का व्यक्ति, जनसेवा की भावना के साथ राजनीति की डगर पर, अपने अडिग सिद्धान्तों के साथ चलते हुए, एक प्रदेश की सरकार में केबिनेट मंत्री के पद तक पहुंच सकता है, इस बात का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण थे, तत्कालीन कांग्रेसी राजनेता घनश्याम पाटीदार।

21 सितम्बर, 1939 को मन्दसौर जिले के जनकपुर ग्राम में ,एक किसान परिवार में उनका जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव में तथा पश्चात की जावद और मन्दसौर में ग्रहण की। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत सामान्य थी, अतः मलेरिया विभाग में दैनिक मजदूरी पर काम करना जरूरी हो गया था, किया। योग्यता का साथ था, इसलिए एस पी कार्यालय मंदसौर में क्लर्क के पद पर नियुक्ति मिल गई। नोकरी के साथ साथ 1965 में अपनी स्नातक शिक्षा पूरी करते हुए, 1968 में विधि स्नातक हो गए। जीवन लक्ष्य समाजसेवा था, अतः 1970 में शासकीय सेवा से मुक्त होकर, नीमच से वकालत शुरू कर दी।

1972 में कांग्रेस की सदस्यता प्राप्त कर, अपना कर्म क्षेत्र नीमच के साथ जावद को भी बना लिया। उन्होंने जावद के ही सहकारी श्रेत्र के सक्रिय राजनेता ,कन्हैयालाल नागोरी के साथ जुड़कर राजनीति में अपनी भूमिका का निर्वहन प्रारंभ कर दिया। जावद से जब नागोरी जी विधायक बने, तब पाटीदार जी, मंदसौर भूमि विकास बैंक के 10 वर्षों तक लगातार उपाध्यक्ष रहे। इसके पश्चात तत्कालीन रतलाम, मंदसौर श्रेत्रीय ग्रामीण बैंक के डायरेक्टर भी रहे। गहरी जनप्रियता के चलते, 1993 में जावद विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के विधायक बने।

मितव्ययी तो वे थे ही, शासकीय बजट को भी किफायत से खर्च करने वाले राजनेता थे। यही कारण रहा कि, उन्होंने अपने श्रेत्र में अधिकांश बड़े कार्य, सीमित बजट होने के कारण, अपने श्रेत्र के अनेक समाजसेवियों तथा व्यावसायियों के आर्थिक सहयोग से भी सम्पन्न कराए। उनके छोटे भाई बृज नेहरू पाटीदार, जो कि कृषि विभाग से एक अधिकारी के नाते सेवामुक्त हुए हैं तथा वर्तमान में समाजसेवा के साथ स्वतंत्र लेखन से भी जुड़े हैं, ने बताया कि, मंत्री बनने के बाद भी पाटीदार ,अपने कार्यालय को प्राप्त होने वाली डाक के खाली लिफाफे फेंकते नहीं थे, बल्कि उन्हें सलीके से काटकर पुनः लिखने योग्य बना लिया करते थे। उनकी कार्यशैली का भी प्रशासनिक क्षेत्रों में सम्मान रहा। अपने विधानसभा क्षेत्र में ,अपने ही दुपहिया वाहन से भ्रमण कर, लोगों से मिलना भी उनका स्वभाव रहा। व्यक्ति चाहे ,परिचित हो या अपरिचित ,बीमार एवं जरूरतमंद की सहायता में आगे रहकर सहयोगी रहते थे।

सादा जीवन, ऊंचे विचार और मूल्य आधारित राजनीति करने के कारण, वे अपने श्रेत्र में निरंतर लोकप्रिय होते चले गए। कांग्रेस की राजनीति में उनको यह प्रतिष्ठा प्राप्त रही, कि वे तत्कालीन मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के सयुंक्त सचिव, विधायक दल की कार्यकारिणी के संयोजक, जेल सुधार समिति के सभापति, मध्यप्रदेश विधानसभा विशेषाधिकार समिति के अध्यक्ष, सार्वजनिक उपक्रम समिति और लोकलेखा समिति के सदस्य रहने के साथ ही,चिकित्सा विभाग की परामर्शदात्री समिति एवं कर्मचारी आवास आबंटन समिति के अध्यक्ष भी रहे।

एक जिम्मेदार विधायक के नाते, अपने बेहतर कर्तव्य निर्वहन हेतु उन्हें 1998 में, उत्कृष्ट विधायक सम्मान से भी अलंकृत किया गया। चूंकि निजी जीवन में ईमानदारी व्याप्त थी, अतः अपने विधानसभा क्षेत्र में, अपने द्वारा कराए गए कार्यों का लेखा जोखा, पुस्तिका 'मैदानी सच्चाई' के माध्यम से लोगों के बीच रखा। यह नवीन प्रस्तुतिकरण अन्य विधायकों हेतु भी प्रेरणादायी बना।

1998 के चुनाव में वे पुनः विधायक बने।स्वच्छ राजनीतिक छवि एवं अनुभव के चलते, वे तत्कालीन प्रदेश सरकार में केबिनेट मंत्री मनोनीत किए गए। यहां भी वे पीछे नहीं रहे, उत्कृष्ट मंत्री होने का यश भी उनके सम्मान खाते में जमा हुआ। जब वे मंत्री हुआ करते थे, तब भी कोई भी, कहीं भी, कभी भी उनसे मिल सकता था। 24 घंटों में से ,समय का एक बड़ा हिस्सा, उनके अनथक काम करने का हुआ करता था। अपने कार्य को इतनी प्राथमिकता देते थे, कि कभी कभी नींद लेने का काम सफर के दौरान ही कर लिया करते थे। उनकी राजनीति, दलगत राजनीति से कोसों दूर थी, इसलिए सभी के प्रिय पात्र बने रहे। 2 फरवरी, 2019 को उनका प्रभुमिलन हो गया। मरणोपरांत भी नेत्रदान होने से, अतिरिक्त जन सम्मान के सुपात्र घोषित हो गए। मध्यप्रदेश की कांग्रेसी राजनीति में, जब भी आदर्श राजनेताओं की बात चलेगी, तब घनश्याम पाटीदार जैसे राजनेताओं को शीर्ष क्रम पर स्मृति में लाया जाएगा।

शिक्षा जगत की अजब कहानी

गतांक से आगे....

डॉ. आर.पी. चतुर्वेदी

परंतु अधिकांश स्कूल किराए के भवनों में और अपर्याप्त व्यवस्थाओं के बीच संचालित हो रहे हैं जिनका भौतिक सत्यापन इमानदारी से हो तो अनेक कमियां उजागर हो सकती है। अनेक निजी स्कूल छोटे-छोटे कमरों के किराए के भवनों में चल रहे हैं तथा धनी बस्तियों में नेशनल, इंटरनेशनल नाम के साथ लगाकर चलाए जा रहे हैं और कहीं-कहीं तो बहुमंजिला इमारतों में चलाए जा रहे हैं। प्रदेश की राजधानी भोपाल में ही जहां शिक्षा विभाग का मुख्यालय तथा सबसे बड़ा मंत्रालय है वहां भी अनेक प्राइवेट स्कूल सकरी गलियों में चलाए जा रहे हैं, जहां खेल के मैदान भी नहीं है तथा कई जगह शुद्ध पानी की भी पर्याप्त व्यवस्था या उपलब्धता नहीं है। बच्चे अपने घर से 2-3 लीटर की बोतल भी पानी की भारी भरकम बस्ते के साथ ढोकर ले जाते हैं। जब राजधानी में ही यह स्थिति है तो अन्य शहरों, कस्बों, ग्रामों की तो बात ही क्या है। पिछले कुछ वर्षों से तो शिक्षा का पूरी तरह से व्यवसायीकरण हो चुका है। नर्सरी से लगाकर प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, कॉलेज, प्रशिक्षण के बीटीआई, आईटीआई, बी.ए ड., एम.एड. आदि प्रशिक्षण के कॉलेज भी प्राइवेट रूप से संचालित हो रहे हैं। इनमें से कुछ तो नामी संस्थाएं अच्छे प्रबंधन वाले ठीक से संचालित हो रही है परंतु अधिकांश तो धन कमाने के उद्देश्य से खोली गई है। जहां छात्रों तथा पालको और पढ़ाने वाले अध्यापकों का जमकर शोषण हो रहा है। इन स्कूलों में सरकारी स्कूलों के नियम कायदों तथा व्यवस्थाओं के पालन का भी अभाव देखा जाता है। सरकारी संस्थाओं में सरकारी कार्यक्रम या राष्ट्रीय आयोजन तथा साहित्यिक गतिविधियों और संस्कारों की नैतिक शिक्षा की क्रीडा गतिविधियों आदि का जो आयोजन होता है उसका अधिकांश प्राइवेट स्कूलों में अभाव देखा जाता है। इन प्राइवेट स्कूलों में मनमाने तरीके से फीस हर साल बढ़ाई जाती है। डोनेशन या गतिविधि या अन्य मद के नाम पर भी मनमानी फीस वसूली जाती है। यहां तक कि कई स्कूलों के तो कक्षा 6 से लगाकर 10 के प्रवेश आवेदन भी 500 रूपए से अधिक कीमत में बेचे जाकर रुपए वसूल किए जाते हैं। अर्थात कदम-कदम पर मनमानी चलती है, जिस पर किसी का कोई नियंत्रण ही नहीं है।

क्रमशः

कथा-'पालना'

गतांक से आगे...

बृजनेहरू पाटीदार
जनवकालत

प्रसव होते ही शिशु की आवाज सुनकर चिड़ियायें चहकने लगी, आपस में मुंह से मुंह लगाकर बतियाने लगे। कुछ पक्षी पेड़ से नींचे उतर आये चीं-चीं, गटर गूं करने लगे उनकी आवाजों से लग रहा था जैसे सभी मंगल गीत गा रहे हों। नर्स मेडम ने जच्चा-बच्चा की देखभाल कर आवश्यक चिकित्सीय कार्य कर जरूरी सलाह, दवाई आदि देने का काम किया। ये फायदा होवे बाबूजी काम करते रहने का। काम करो तो दुःख में भी कायनात साथ देने लगे साहब। बूढ़ी चाची ने जाते हुए कहा।

विक्रम मुस्कारा दिया। थोडी ही देर में बडी पलटन भी जजकी का सभी सामान लेकर आ गई। हरिया का हालचाल पूंछकर फूफी को सभी सामान देते हुए बोली हरिया को कोई कमी नहीं होनी चाहियें। अभी इसको अजवाईन का पानी दो। फिर जो जो लगे दलिया, दुध, घी, काजू-बादाम, कीशमीश, देशी दवाईयां सब है इसमें ओर जो भी लगे बताना। अरे वीरसिंग को बताया भी बच्चा हुआ या घर लक्ष्मी आई है। लल्लन भयो बडी मालकीन अंदर से फूफी ने तेज आवाज में जवाब दिया। अरे वाह ये तो हलधर है भाई इसका नाम बलराम रखना। सुनकर सभी ने ताली बजा दी। करतल ध्वनी सुनकर पेड़ो पर बैठे पक्षी भी चहकने लगे। अभी पांच सात दिन ही निकले होंगे कि हरिया ने बलराम की इमली की डाल पर डाल, कमर में पुरानी लुगडी (पुरानी चुनरी) का पट्टा बांधकर खेत में अपने पति के पास काम करने पहुंच गई। खेत में काम करने वाले चकित हो देखते रह गये। कोई ऊंगली दबाये, कोई गुस्से में, लगभग सभी के मुख से निकला क्यों रे पागल हो गई क्या तू। छोटे से बच्चे को छोडकर यहां आ गई। फिर अभी तो तेरी कमजोरी भी नहीं निकली। नहीं नहीं आप चिंता न करो मैं ठीक हुं। मेरे मरद को अकेले कितना काम करना पडेगा। वीरसिंग ने जवाब दिया नहीं नहीं मेरी चिंता काहे करती है मैं ठीक हूं। मुझे कोई परेशानी नही है। छोटे साहब ने भी कहा था तुम आराम करना किसी बात की चिंता नही करना। बच्चे की देखभाल भी तो करनी होगी। नहीं-नहीं मैं समय-समय पर जाकर दूध पीला दूंगी। देखो वहां पर शेरू (श्वान) और श्योरी घ्यान रखने के लिये है। जैसे ही बच्चा रोता है छोटी-बड़ी चिडियाएं, तोते, कबुतर आदि पक्षी कैसे मीठी-मीठी आवाजे कर उसे सहलाते है। वो देखो मोर ओर सारस का जोडा भी आ गया। खेत पर काम कर रहे सभी जन ये दृश्य देखकर विस्मीत हो, भाव विभोर हो गये। ये तो बांके बिहारी की ही लीला है। बूढ़ी चाची सही कहती है नन्हे बच्चों का तो कायनात भी साथ देने लगती है। इसी दौरान छोटे मालिक विक्रमसिंग ओर बडी पलटन की भी जीप आकर खडी हो गयी वो भी पलभर पालने के पास का दृश्य देखकर विस्मय के साथ आनन्दीत हो गये। बोली ये तो पालनहार का पालना है। अब इसकी चिंता तो उसके ही हाथ है। उधर हरिया को खेत में काम करते देख बोले ये नहीं मानेगी कोई समझाओ इसे। शिशु को माँ का कोमल स्पर्श भी तो चाहिये।

इति श्री।